



महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा
(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)
जनसंपर्क कार्यालय
PUBLIC RELATIONS OFFICE



विश्वविद्यालय में 'ज्ञान, शांति, मैत्री और गांधी' विषय पर आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का हुआ समापन वैश्विक शांति-अहिंसा चाहते थे गांधी : प्रो. भालचंद्र मुणगेकर
वर्धा, 04 अक्टूबर 2023: जाने-माने शिक्षाविद् राज्यसभा एवं योजना आयोग के पूर्व सदस्य प्रो. भालचंद्र मुणगेकर ने कहा है कि महात्मा गांधी वैश्विक शांति और अहिंसा के पक्षधर थे। वे सीमा से परे मानव सभ्यता चाहते थे। प्रो. मुणगेकर महात्मा



गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा में रजत जयंती पर्व पर 02 और 03 अक्टूबर को 'ज्ञान, शांति, मैत्री और गांधी'



विषय पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी के समापन कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि संबोधित कर रहे थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. लेल्ला कारुण्यकरा ने की। प्रो. मुणगेकर ने गांधी जी के जीवन-दर्शन के विभिन्न पहलुओं को विस्तार से बताते हुए कहा कि गांधी के दर्शन में शांति, अहिंसा, विवेक, स्वतंत्रता, धर्मनिरपेक्षता, वैश्विक परंपरा प्रमुखता से दिखायी देती हैं वे एक अकल्पनीय और पारदर्शी व्यक्तित्व थे। विश्व के इतिहास में उनके जैसा

पोस्ट हिंदी विश्वविद्यालय, गांधी हिल्स, वर्धा-442001 (महाराष्ट्र), भारत
ई-मेल/E-mail: mgahvpro@gmail.com, वेबसाइट/Website: www.hindivishwa.org
दूरभाष : +91-7152-252651 मोबाइल/Mobile : 9960562305



महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा
(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)
जनसंपर्क कार्यालय
PUBLIC RELATIONS OFFICE



बहुआयामी व्यक्ति होना 'न भूतो न भविष्यती' इस कहावत को चरितार्थ करता है। प्रो. मुणगेकर ने गांधी और अंबेडकर के बीच हुए संवाद का जिक्र करते हुए कहा कि दोनों नेता व्यक्ति स्वतंत्रता, धर्मनिरपेक्षता और स्त्री-पुरुष समानता चाहते थे। उन्होंने कहा कि दोनों के कारण भारत में इतने कम समय में महिलाओं की प्रगति हुई है, विश्व में इस तरह का उदाहरण नहीं मिलता। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय के साथ मेरा भावात्मक रिश्ता जुड़ा हुआ है और मैं यहां चौथी बार आया हूँ। अध्यक्षीय उद्बोधन में कुलपति प्रो. लेल्ला कारुण्यकरा ने कहा कि ज्ञान-शांति-मैत्री ये तीन शब्द विश्वविद्यालय के बोध



चिन्ह में अंकित है। इस पर विश्वविद्यालय के रजत पर्व पर गांधी जयंती के उपलक्ष्य में अकादमिक संगोष्ठी का आयोजन



होना हम सभी के लिए गौरव की बात है। उन्होंने विश्वविद्यालय में हो रहे आयोजनों में बढ-चढकर हिस्सा लेने की अपील भी की।

पोस्ट हिंदी विश्वविद्यालय, गांधी हिल्स, वर्धा-442001 (महाराष्ट्र), भारत
ई-मेल/E-mail: mgahvpro@gmail.com, वेबसाइट/Website: www.hindivishwa.org
दूरभाष : +91-7152-252651 मोबाइल/Mobile : 9960562305



महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा
(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)
जनसंपर्क कार्यालय
PUBLIC RELATIONS OFFICE



संगोष्ठी का समापन 03 अक्टूबर को गालिब सभागार में किया गया। प्रारंभ में अतिथियों द्वारा गांधी जी के चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित की गयी। कार्यक्रम का प्रारंभ विश्वविद्यालय के कुलगीत से किया गया। इस अवसर पर गांधी जयंती सप्ताह के अंतर्गत आयोजित निबंध, प्रश्नोत्तरी, चित्रकला, वाद-विवाद एवं घोष वाक्य आदि प्रतियोगिताओं के पुरस्कार का वितरण कुलपति प्रो. कारुण्यकरा के हाथों किया गया। कार्यक्रम के प्रारंभ में प्रो. मुणगेकर और कुलपति प्रो. कारुण्यकरा ने महात्मा गांधी एवं डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर अभिवादन किया।

कार्यक्रम का संचालन सहायक प्रोफेसर डॉ. संदीप मधुकर सपकाले ने किया तथा संगोष्ठी के संयोजक एवं गांधी एवं शांति अध्ययन विभाग के अध्यक्ष डॉ. राकेश मिश्र ने धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम का समापन राष्ट्रगान से किया गया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के अधिष्ठातागण, विभागाध्यक्ष, अध्यापक, कर्मचारी, शोधार्थी एवं विद्यार्थी बड़ी संख्या में उपस्थित रहे।

'ज्ञान, शांती, मैत्री आणि गांधी' या विषयावर दोन दिवसीय राष्ट्रीय चर्चासत्राचा समारोप

गांधीजींना जागतिक शांतता-अहिंसा हवी होती : प्रो. भालचंद्र मुणगेकर

वर्धा, 04 ऑक्टोबर 2023: महात्मा गांधी यांना जागतिक शांतता आणि अहिंसा हवी होती. ते जागतिक मानवी सभ्यतेचे पुरस्कर्ते होते असे प्रतिपादन सुप्रसिद्ध शिक्षणतज्ञ, राज्यसभा आणि नियोजन आयोगाचे माजी सदस्य प्रो. भालचंद्र मुणगेकर यांनी केले. ते महात्मा गांधी आंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालयाच्या रौप्यमहोत्सवी वर्षानिमित्त 02 आणि 03 ऑक्टोबर रोजी 'ज्ञान, शांती, मैत्री आणि गांधी' या विषयावर आयोजित राष्ट्रीय चर्चासत्राच्या समारोप प्रसंगी प्रमुख पाहुणे म्हणून बोलत होते. कार्यक्रमाच्या अध्यक्षस्थानी कुलगुरू प्रो. लेल्ला कारुण्यकरा होते. गांधीजींच्या तत्त्वज्ञानाचे विविध पैलू सविस्तरपणे मांडतांना प्रो. मुणगेकर म्हणाले की गांधीजींच्या तत्त्वज्ञानात शांतता, अहिंसा, विवेक, व्यक्ती स्वातंत्र्य, धर्मनिरपेक्षता आणि जागतिक परंपरा ठळकपणे दिसतात. ते एक अप्रत्याशित आणि पारदर्शक व्यक्ती होते. जगाच्या इतिहासात ते 'न भूतो न भविष्यती' असे बहुआयामी व्यक्तिमत्त्व होते. गांधी आणि डॉ. आंबेडकर यांच्यातील संभाषणाचा संदर्भ देत प्रो. मुणगेकर म्हणाले की दोन्ही नेत्यांना व्यक्ति स्वातंत्र्य, धर्मनिरपेक्षता आणि स्त्री-पुरुष समानता हवी होती. या दोघांमुळेच भारतात महिलांनी इतक्या कमी कालावधीत प्रगती केली, असे उदाहरण जगात इतरत्र सापडत नाही, असेही ते म्हणाले. विश्वविद्यालया सोबत माझे भावनिक नाते असून मी चौथ्यांदा येथे आलो असल्याचे ते म्हणाले. अध्यक्षीय भाषणात कुलगुरू प्रो. लेल्ला कारुण्यकरा म्हणाले की ज्ञान, शांती आणि मैत्री हे तीन शब्द विश्वविद्यालयाच्या बोध चिन्हात कोरलेले आहेत. विश्वविद्यालयाच्या रौप्यमहोत्सवी वर्षात गांधी जयंतीनिमित्त या विषयावर एक शैक्षणिक चर्चासत्र आयोजित करणे ही आपल्या सर्वांसाठी अभिमानाची बाब आहे. विश्वविद्यालयात होणाऱ्या कार्यक्रमांमध्ये सर्वांनी सक्रिय सहभाग घेण्याचे आवाहनही त्यांनी केले.

चर्चासत्राचा समारोप 03 ऑक्टोबर रोजी गालिब सभागृहात झाला. प्रारंभी पाहुण्यांनी गांधीजींच्या फोटोला पुष्पहार अर्पण करून अभिवादन केले. कुलगीताने कार्यक्रमाची सुरुवात झाली. यावेळी गांधी जयंती सप्ताहांतर्गत आयोजित निबंध, प्रश्नमंजुषा, चित्रकला, वाद-विवाद व घोषवाक्य आदी स्पर्धांच्या पारितोषिकांचे वितरण कुलगुरू प्रो.

 ज्ञान शांति मैत्री	महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा (संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय) जनसंपर्क कार्यालय PUBLIC RELATIONS OFFICE	 आज़ादी का अमृत महोत्सव
---	--	--

कारुण्यकरा यांच्या हस्ते झाले. कार्यक्रमाच्या प्रारंभी प्रो. मुणगेकर आणि कुलगुरू प्रो. कारुण्यकरा यांनी महात्मा गांधी आणि डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांच्यामूर्तीला हारार्पण करून अभिवादन केले.

कार्यक्रमाचे संचालन सहाय्यक प्राध्यापक डॉ.संदीप मधुकर सपकाळे यांनी केले तर चर्चा सत्राचे संयोजक व गांधी व शांती अध्ययन विभागाचे अध्यक्ष डॉ.राकेश मिश्रा यांनी आभार मानले. राष्ट्रगीताने कार्यक्रमाची सांगता करण्यात आली. यावेळी माजी कुलगुरू प्रो. जी. गोपीनाथन, विश्वविद्यालयाचे अधिष्ठाता, विभागप्रमुख, शिक्षक, कर्मचारी, संशोधक व विद्यार्थी मोठ्या संख्येने उपस्थित होते.